माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सांवेगिक परिपक्वता तथा आत्मबोध पर ई-लर्निंग के प्रभाव का अध्ययन

पीएच.डी. (शिक्षाशास्त्र) उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु
दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय)
को प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की रूपरेखा

शोधार्थिनी

अंशु रानी

शोध निर्देशिका

डॉ. चेतन प्यारी

फाउंडेशन ऑफ एडुकेशन विभाग, शिक्षा संकाय
दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनीवर्सिटी)
दयालबाग, आगरा – 282005

2022

प्रस्तावना

शिक्षा मानव को एक उत्तम व्यक्ति बनाने में महत्वपूर्ण योगदान देती है। शिक्षा में ज्ञान, उत्तम आचरण, तकनीकी क्षमता या दक्षता, शिक्षण कलाऐं या पद्धतियाँ इत्यादि सम्मिलित रहती है। शिक्षा का कार्य समाज की एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को ज्ञान हस्तातंरण करना है। ज्ञान हस्तांतरण की प्रभावशाली प्रक्रिया निश्चित रूप से शिक्षक मे अन्तर्निहित कौशलों, तकनीकियों एवं शिक्षण विधियांे के प्रयोग पर निर्भर है। शिक्षण विधियाँ सामान्य कक्षा में शिक्षा प्रबन्ध रणनीतियों के लिए उपयोग की जाती है। क्लार्क (1970) "शिक्षण के अन्तगर्त वे क्रियाएँ सम्मिलित होती हैं, जिनका प्रारूपण और निष्पादन छात्र या अधिगमकर्ता के व्यवहार में कुछ परिवर्तन उत्पन्न करने के लिए किया जाता है।"

एन॰ सी॰ टी॰ ई॰ अधिनियम 2014 के अनुसार भारतीय शिक्षा प्रणाली को चार भागों में विभाजित किया गया है।

प्राथमिक स्तर - प्राइमरी (1-5) उच्च प्राइमरी (6-8)

माध्यमिक स्तर- माध्यमिक (9-10) उच्चतर माध्यमिक (11-12)

स्नातक स्तर (कला, वाणिज्य और विज्ञान वर्ग)

शिक्षक शिक्षा

1. प्राथमिक शिक्षक शिक्षा (डी० एल० एड०, और बी० एल० एड०)
2. माध्यमिक शिक्षक शिक्षा (बी० एल० एड०, बी० पी० एड० और बी० एड०)

"माध्यमिक शिक्षा भारतीय शिक्षा प्रणाली की मध्यम कड़ी है। यह अपने विकास के साथ 21वीं सदी के भारत का उदय अवश्य करेगी।" **- बोहरा, एस0 के0 (2014)**

अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता शिक्षकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा माध्यमिक शिक्षा के विकास में 21वीं सदी के भारत को दृष्टांत किया जा सकता है। ऐसा माना जाता है कि माध्यमिक शिक्षा न केवल कड़ी है, वरन् शिक्षा का वास्तविक आधार है, क्योंकि माध्यमिक शिक्षा के अन्तर्गत व्यकिशोर बालकों एवं बालिकाओं को दिशा एवं दशा प्रदान करने का कार्य करती है।

स्टेनले हॉल के अनुसार - "किशोरावस्था आँधी एवं तूफान की अवस्था है।"

ऐसी स्थिति में माननीय शिक्षा का अस्तित्व विराट रूप धारण करता है, क्योंकि इस काल में अध्ययनरत् छात्रों की आयु 14-17 वर्ष होती है, जो कि विभिन्न प्रकार की योग्यताओं, क्षमताओं, कौशलों, आशाओं और आकांक्षाओं का योग है। अतः माध्यमिक शिक्षा में 21 वीं सदी को दृष्टिगत रखते हुये भारत सरकार के विजन स्किल इंडिया के तहत ई-लर्निंग अवधारणा को पंख प्रदान करने जैसा कार्य तो किया जा रहा है। परन्तु वहीं उनकी अवस्था (आयुवर्ग) को देखते हुये उस काल में अर्थात् माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों के सांवेगिक परिपक्वता के साथ ई-लर्निंग तथा आत्मबोध जैसे सम्प्रत्यों को जोड़े रखना, मानवीयता बालकों में नैतिक उत्थान तथा परस्पर सम्बन्धों की मजबूती पाई जायेगी।

शोध समस्या का प्रादुर्भाव

वर्तमान समय में 21वीं सदी के दृष्टिगत भारत के भविष्य का निर्माण उसकी कक्षाओं में हो रहा है। कोठारी आयोग (1964-66) जहाँ भारत एक ओर वैश्विक पटल पर अपना कीर्तिमान स्थापित कर रहा है, वहीं दूसरी ओर भारत की शिक्षा व्यवस्था अमेरिका एवं चीन के बाद तीसरा स्थान रखती है।

जहाँ पर प्रधानमंत्री की स्किल इंडिया एवं डिजिटल इंडिया केंपेन के अन्तर्गत भारत को पूर्ण रूपेण वर्चुअल डिजिटलाइजेशन के रूप में परिवर्तित करने का काम किया जाता रहा है। जिसके अन्तर्गत एक पक्षीय दृष्टि से छात्रों में डिजिटल डिवाइस का प्रयोग दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है, परन्तु क्या वे इस डिजिटल युग में उपयोग करने के साथ-साथ इलेक्ट्रा ॅनिक लर्निंग भी कर रहे है या नहीं?

मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखते हुये माध्यमिक स्तर के बालकों की अवस्था व्यकिशोरावस्था होती है। अतः उनकी ई-लर्निंग किस प्रकार से (सकारात्मक एवं नकारात्मक) सांवेगिक परिपक्वता को प्रभावित करती है। साथ ही वर्चुअल इमोशनल कनेक्शन से क्या प्रभाव प्राप्त हुआ है, तथा ई-लर्निंग और सांवेगिक परिपक्वता के साथ-साथ आत्मबोध को वास्तविक रूप से समझ पाने में सक्षम है या मात्र डिजिटल आभा मण्डल में कस्तूरी मृग के समान मात्र भृमित हैं। ऐसा अध्ययन करने के लिए खोजकर्ता ने ई-लर्निंग के प्रभाव को छात्रों की सांवेगिक परिपक्वता और आत्मबोध पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करने का प्रयास किया है।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

मोशाहिद (2017) बीएड छात्रों की भावनात्मक परिपक्वता और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंध पाया । वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया था अध्ययन के लिए नमूना 120 बीएड छात्रों के लिए 40 पुरुष (कला और विज्ञान से 20) है और 80 महिला (कला और विज्ञान प्रत्यके से 40) से चुना गया। भावनात्मक परिपक्वता का आकलन करने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला उपकरण है सिंह और भागर्व और अकादमिक द्वारा विकसित भावनात्मक परिपक्वता स्केल परीक्षा में अंकों से उपलब्धि का आकलन किया गया। मीन, एसडी, टी-टेस्ट और सहसंबंध डेटा का विश्लेषण करने के लिए कार्यरत हैं पता चलता है कि सकारात्मक है और भावनात्मक परिपक्वता और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच महत्वपूर्ण संबंध हैं बी.एड पुरुष छात्र में उच्च स्तर की भावनात्मक परिपक्वता होती है उनकी महिला समकक्षो ंकी तुलना में। हालांिक, यह पाया गया कि महिला बी.एड छात्र पुरुष बी.एड की तुलना में शैक्षणिक उपलब्धि का उच्च स्तर है। छात्रों और बी.एड. विज्ञान विषयों के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि उच्च स्तर की है ।

सिंह, कौर एवं दुरीजा (2012) ने विश्वविद्यालयी छात्रों के बीच संवेगात्मक परिपक्वता के अन्तर का अध्ययन किया। इस अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य अन्तर्विद्यालयी प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले खिलाड़ी छात्र और सामान्य छात्रों के बीच की संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन करना था। प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के रूप में पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ से सम्बद्ध कालेज से 200 छात्रों को चुना गया जिसमें से 100 छात्र अन्तर्विद्यालयी प्रतिय¨गिताओं में भाग लेने वाले खिलाड़ी थे तथा 100 छात्र सामान्य श्रेणी के थे जो कि खिलाड़ी नहीं थे। प्रत्यके वर्ग

में 50-50 छात्राएँ भी थीं तथा प्रत्यके छात्र-छात्रा की उम्र 18-26 वर्ष की थी। अध्ययन के परिणामस्वरूप यह पाया गया कि खिलाड़ी छात्र-छात्राआंे में सामाजिक समायोजन का अभाव था लेकिन संवेगात्मक परिपक्वता का स्तर ऊँचा पाया गया, परन्तु सामान्य श्रण्ेाी के छात्र-छात्राओं में खिलाड़ी छात्र-छात्राओं की तुलना में संवेगात्मक परिपक्वता में कमी पायी गयी।

मेहता (2011) ने विवाहित और अविवाहित महिलाओं के सन्दर्भ में संवेगात्मक परिपक्वता और दुश्चिन्ता का अध्ययन किया। इस अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य विवाहित और अविवाहित महिलाओ ंकी संवेगात्मक परिपक्वता का माप करना, दुश्चिन्ता की माप करना तथा संवेगात्मक परिपक्वता व दुश्चिन्ता में सहसम्बन्ध का पता लगाना था। प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के रूप में गजुरात राज्य के भावनगर जिले के 30 स्त्रियों का चयन किया गया जिसमें 15 स्त्रियां विवाहित थीं व 15 अविवाहित थीं। अध्ययन के परिणामस्वरूप यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि अविवाहित महिलाओं की संवेगात्मक परिपक्वता और दुश्चिन्ता का स्तर विवाहित महिलाओ ंकी अपेक्षा उत्तम था तथा संवगेात्मक परिपक्वता और दुश्चिन्ता में सकारात्मक संबंध पाया गया अर्थात् संवेगात्मक परिपक्वता बढ़ने से दुश्चिन्ता बढ़ती है।

बर्जर एट अल (2019) ने किशोरों के करियर निर्णय और महत्वाकांक्षा संरेखण की आत्म-प्रभावकारिता पर तत्काल प्रतिक्रिया के प्रभाव की जांच की। पश्चिमी सिडनी में रहने वाले एक अध्ययन के लिए 211 किशोरों का चयन किया गया। परिणामों ने बताया कि जिन छात्रों ने करियर और शिक्षा के बारे में अपनी महत्वाकांक्षाओं पर स्वचालित प्रतिक्रिया प्राप्त की, कैरियर वे के निणर्य और आकांक्षात्मक संरेखण की आत्म-प्रभावकारिता में सुधार कर सकते हैं। उन्हें व्यावसायिक जानकारी एकत्र करने और लक्ष्यों के चयन में अधिक विश्वास है।

भल्ला (2013) ने किशोरों के आत्म-प्रभावकारिता और करियर के निर्णय लेने की शैली के साथ निर्णय लेने की कठिनाइयों को देखनेे के लिए एक अध्ययन का प्रयास किया। अध्ययन 533 वरिष्ठ माध्यमिक छात्रों पर आयोजित किया गया। परिणामों ने पता लगाया कि करियर से संबंधित निर्णय लेने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, जो कि कैरियर के निर्णय के साथ आत्म-प्रभावकारिता से नकारात्मक रूप से संबंधित थे। किशोरों को अपने स्वयं के विश्लेषण

में अधिक आत्मविश्वास था, व्यावसायिक जानकारी इकट्ठा करना, लक्ष्यों का चयन करना, योजना बनाना और समस्याओं को हल करना जिसके कारण करियर के बारे में निर्णय लेने में कम कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।

ज़िबल (2010) ने व्यवहार कैरियर विकल्प लक्ष्यों को उत्तेजित करने में किशोरों के करियर निर्णय आत्म-प्रभावकारिता और कैरियर परिपक्वता की भूमिका की जांच की। इस जांच में 220 किशोरों ने भाग लिया। सीडीएसई-एसएफ और करियर परिपक्वता सूची के माध्यम से डेटा एकत्र किया गया था। परिणामों ने संकेत दिया कि उत्साही, करियर पथ का विश्लेषण, करियर की परिपक्वता, करियर की पसंद और इन करियर विकल्पों के अनुरूप पत्रों के परिणामों को निर्धारित करने के लिए किशोरों की प्रभावकारिता को सकारात्मक रूप से प्रभावित किया। इसके अलावा, करियर के निर्णय के आधार पर लक्ष्यों के साथ सकारात्मक रूप से जुड़े करियर के निर्णय और व्यावसायिक परिणाम की प्रभावकारिता। करियर के निर्णय की आत्म-प्रभावकारिता का अधिक स्तर, अधिक अनुकूल परिणाम आए और परिणामस्वरूप, करियर विकल्पों की पुष्टि हुई।

बेल (2002) ने एक हस्तक्षेप के रूप में करियर निर्णय लेने के पाठ्यक्रम पर विचार करके छात्राओं के करियर की आत्म-प्रभावकारिता का निरीक्षण करने के लिए एक अध्ययन किया। दोनों समूहों पर करियर निर्णय आत्म-प्रभावकारिता का पैमाना (टेलर, बेट्ज़ और क्लेन, 1996) लागू किया गया। 105 स्नातक छात्रों पर एक अध्ययन किया गया था। नियंत्रण समूह अध्ययन के पुराने निर्णय लेने के पाठ्यक्रम का अनुसरण करता है, भले ही उपचार समूह ने घटक बढ़ाने के रूप में लिंग भूमिका, समाजीकरण अन्वेषण, मानसिक शिक्षा और आत्म-प्रभावकारिता के साथ पारंपरिक पाठ्यक्रम को एकीकृत किया हो। परिणामों से पता चला कि जो लड़कियां उपचार समूह में थीं, उन्होंने मर्दाना या अभिमानी प्रकार के छात्रों के साथ तुलना करते हुए आत्म-प्रभावकारिता में वृद्धि दिखाई, हालांकि, लड़कियां नियंत्रण समूह से संबंधित हैं, उन्होंने आत्म-प्रभावकारिता में कोई बदलाव नहीं दिखाया। जैविक लिंग इन

समूहों में महत्वपूर्ण भूमिका नहीं निभाता है। बच्चों को उनके पीछे दिखाया गया है आम त©र पर संचार और भावनात्मक क्षमता में साथियों का विकास करना।

अल्हुमैद खदीजा , अली सना , वाहीदअंबरीन ,जाहिद एरुम (2020) ई-लर्निंग दुनिया भर में पारंपरिक कक्षा के माहौल की जगह ले रहा है। विशेष रूप से वर्तमान कोविद -19 प्रकोप के दौरान, शैक्षिक गतिविधियों को जारी रखने के लिए ई-लर्निंग एक महत्वपूर्ण स्रोत है। इस संबंध में, इस सूक्ष्म स्तरीय अध्ययन का उद्देश्य औपचारिक शिक्षा के विकल्प के रूप में ऑनलाइन शिक्षण के बारे में शिक्षकों की धारणाओं की जांच करना है। प्रौद्योगिकी स्वीकृति मॉडल (टैम) को वैचारिक ढांचे के रूप में उपयोग करके, शोधकर्ताओं ने रावलपिंडी, पाकिस्तान से 30 विश्वविद्यालय स्तर के प्रशिक्षकों का एक संक्षिप्त नमूना चुना। अध्ययन की परिकल्पना की पुष्टि करने के लिए, शोधकर्ताओं ने कई प्रतिगमन विश्लेषण भी किए। पाकिस्तान में कोविद -19 के दौरान प्रौद्योगिकी स्वीकृति और ई-लर्निंग के बीच सकारात्मक संबंधों का पता चला। कुल मिलाकर, उत्तरदाताओं ने लॉकडाउन की स्थिति के दौरान ई-लर्निंग स्वीकृति और छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन पर इसके प्रभावों के बारे में एक अनुकूल राय व्यक्त की। हालांकि, कमजोर बुनियादी ढांचे के कारण, पाकिस्तान का शिक्षा मंत्रालय भी ई-लर्निंग प्रणाली को लागू करने में कई चुनौतियों का सामना कर रहा है। इसके अलावा, ऑनलाइन शिक्षण के प्रति ई-लर्निंग और छात्रों के उदासीन रवैये तक पहुंच महत्वपूर्ण चुनौतियां हैं। इस प्रकार शोधकर्ता ई-लर्निंग के महत्व के बारे में शिक्षकों की राय को उजागर करने के लिए अधिक अध्ययन की सलाह देते हैं। इसलिए, वर्तमान अध्ययन न केवल स्थानीय सरकार को व्यावहारिक रणनीतियों को पेश करने में मदद करेगा, बल्कि छात्रों को उनकी शैक्षिक यात्रा के आवश्यक भाग के रूप में ई-लर्निंग को स्वीकार करने के लिए भी प्रेरित करेगा।

बिष्णु जी.सी., 2018 इस अध्ययन का उद्देश्य "स्वास्थ्य और जनसंख्या में ई-लर्निंग सामग्री के उपयोग के प्रति छात्र के दृष्टिकोण को जानना है। अध्ययन में वर्णनात्मक और मात्रात्मक सर्वेक्षण डिजाइन को अपनाया। इकट्ठा करने के

लिए जानकारी, काठमांडू घाटी में उच्च माध्यमिक स्तर के 200 छात्रों के लिए दृष्टिकोण पैमाने का एक सेट का उपयोग किया गया था। एकत्रित आंकड़ों को प्रतिशत जैसे सरल सांख्यिकीय उपकरणों का उपयोग करके व्यवस्थित, सारणीबद्ध, विश्लेषण और व्याख्या किया गया और अध्ययन के परिणाम से पता चला कि स्कूल के छात्रों में पर्याप्त ई-लर्निंग है स्वास्थ्य और जनसंख्या शिक्षा को सिखाने और सीखने के लिए उपयुक्त मौजूदा स्थिति वाले उपकरण छात्रों के पास है। स्वास्थ्य और जनसंख्या शिक्षा में ई-लर्निंग सामग्री के उपयोग के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण है। अधिकांश छात्र सहमत थे कि ई-लर्निंग उपकरण उच्च उपलब्धि के साथ-साथ उच्च अध्ययन के लिए बहुत उपयोगी हैं, क्योंकि वे बुनियादी अवधारणा प्रदान करते हैं।

मज सं, (2014) ने इस अध्ययन का उद्देश्य नवाचार विशेषताओं के प्रभाव की तुलना करना था श्रीलंका और मलेशिया के बीच स्नातकोत्तर छात्रों की ई-लर्निंग स्वीकृति। इनोवेशन थ्योरी का डिफ्यूजन इनोवेशन के पांच गुणों की पहचान करता है सापेिक्षक लाभ, अनुकूलता, जटिलता, परीक्षणशीलता, अवलोकनीयता ई-लर्निंग के उपयोग के दृष्टिकोण और इरादे के लिए । इसलिए श्रीलंका और मलेशिया के बीच तुलना ई-लर्निंग का उपयोग करने के दृष्टिकोण और इरादे के प्रति नवाचार की विशेषता अधिक है कैसे आर्थिक और तकनीकी पर ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रासंगिक विकास स्नातकोत्तर छात्रों की प्राथमिकताओ पर प्रभाव डालता है। एक यादृच्छिक स्थानीय स्तर पर स्थित स्नातकोत्तर छात्रो ंसे 400 का नमूना लिया गया था। यह पाया गया कि श्रीलंका और मलेशिया अवलाकेन और सापक्ष्ेा के सदंर्भ मे ंई-लर्निंग स्वीकृति के समान है लाभ जो ई-लर्निंग का उपयोग करने के दृष्टिकोण और इरादे पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है सीखने और जटिलता और परीक्षण क्षमता ई-लर्निंग पर कम से कम महत्वपूर्ण कारक थे- श्रीलंका और मलेशिया दोनों में सीखने की स्वीकृति। यह पहला प्रयास है श्रीलंका और मलेशिया के बीच ई-लर्निंग स्वीकृति की तुलना और खुलासा श्रीलंका और मलेशिया के बारे में जानकारी अलग-अलग है। निष्कर्ष कर सकते हैं कि श्रीलंका और मलेशिया में उच्च शिक्षण संस्थानो द्वारा ई-लर्निंग उपयोग किया जाता है।

बेली (2013) बेली ने अपने अध्ययन में कहा है कि, महत्वपूर्ण बात यह है कि सीखने वाले की जरूरतों पर ध्यान केंद्रित किया जाए। सामग्री और इंटरैक्शन का एक अच्छा मिश्रण शिक्षार्थियों को सबक से प्राप्त ज्ञान को बनाए रखने

में मदद करेगा। और अगर आप अनिश्चित हैं कि कहां से शुरू करें, तो आप इसी तरह की परियोजनाओं से प्रेरणा ले सकते हैं। उदाहरण के लिए, विविधता संबंधी प्रशिक्षण जैसे कुछ अन्य अनुदेशात्मक डिजाइनरों द्वारा किया गया है, इसलिए यह जानने की कोशिश करें कि उन्होंने कौन सी रणनीतियों का उपयोग किया है जो उनके मॉड्यूल के लिए भी काम कर सकते हैं।

पाण्डे, बी. पाण्डे, बी. बी. (2019) ने "किशोर लड़को की समायोजन समस्याओं एवं भावनात्मक परिपखता" किशोर लड़को की समायोजन समस्यओं, भावनात्मक परिपखता तथा उनके शैक्षणिक प्रभाव का अध्ययन। विषय पर पी-एच.डी. स्तरीय शोध अध्ययन किया और निष्कर्ष में पाया कि - ग्रामीण विद्यार्थियों ने भावात्मक, स्वास्थ्य तथा विद्यालयी समायोजन क्षेत्र में, उच्च अंक प्राप्त किये। शहरी विद्यार्थियों ने तुलनात्मक रूप से सौन्दर्य समायोजन क्षेत्र में अच्छे अकं प्राप्त किये। समायोजन, प्रशंसा का स्तर तथा उपलब्धि के मध्य सार्थक सम्बन्ध पाया गया। ग्रामीण विद्यार्थी विद्यालयी समायोजन, स्वास्थ्य तथा भावात्मक क्षेत्रों में कठिनाई का अनुभव करते है।

Singh, Rashi (2012) -भावनात्मक परिपक्वता के सम्बन्ध में माध्यमिक विद्यालय के ग्रामीण और शहरी छात्रों का तुलनात्मक अध्ययन। परिणाम स्वरूप भावनात्मक परिपक्वता के सम्बन्ध में माध्यमिक विद्यालय के शहरी छात्र और शहरी छात्राओं के बीच कोई महत्वपूर्ण अन्तर नही पाया गया। भावनात्मक परिपक्वता के सम्बन्ध में माध्यमिक विद्यायल के ग्रामीण छात्र और ग्रामीण छात्राओं के बीच कोई महत्वपूर्ण अन्तर नही पाया गया।

समीक्षात्मक निष्कर्ष - विभिन्न शोध अध्ययनों मोशाहिद (2017), अंसारी (2015), शर्मा (2012) सिंह, कौर एवं युरीजा (2012), मेहता (2011) और सुवायन एवं विश्वनाथन (2011) आदि ने भावनात्मक परिपक्वता, शैक्षणिक उपलब्धि तनाव, संवेगात्मक वृद्धि एवं दुशिचिन्ता की माप आदि तनाव, के सन्दभ के तुलनात्मक अध्ययन सम्पादित किये है। विद्यार्थियों के आत्मबोध पर पड़ने वाले प्रभाव के सन्दर्भ में बर्जर एट अल (2019) भल्ला (2013) जिबल (2010) बेल (2002) आदि ने विद्यार्थियो के आत्मबोध पर तत्काल प्रतिक्रिया, कैरिय परिपकवता, शैक्षिक समायोजन के सन्दर्भ में शोध अध्ययन सम्पदित किये। जिसमे लिगं भूमिका सामाजिक अन्वेषण, मानसिक शिक्षा आदि के प्रभाव

का अध्ययन सम्पादित किया। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शिक्षा के दौरान ई-लर्निंगं की स्थिति के प्रभाव, समस्या एवं विकास के अध्ययनों में अल्हुमैद खदीजा, अली सना, बाहीद अंबरीन, जाहिद एरूम (2020), विष्णु जी.सी. (2018), मज संम (2014) एवं बेली (2013) आदि ने विद्यार्थियों के जरूरत एवं ध्यान, नवाचार विशेषताओं, ई. लर्निंगं की प्रभावशीलता और ई लर्निंगं सामग्री उपयोग के प्रति छात्र के दृष्टिकोण को जानना जिसमें इस वर्ग के विद्यार्थियों के चैमुखी विकास के सन्दर्भ में आने वाले उपयोग पर बल दिया। भावनात्मक परिपक्वता और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच सम्बन्ध पाया गया। जिसके अन्तर्गत महिला की तुलना में पुरूष छात्र में उच्च स्तर की भावनात्मक परिपक्वता होती है। एक अध्ययन के अन्तर्गत देखा गमा कि खिलाड़ी छात्र-छात्राओं में सामाजिक समायोजन का अभाव था लेकिन संवेगात्मक परिपक्वता का स्तर ऊचा पाया गया। परन्तु सामान्य श्रेणी के छात्र-छात्राओं में खिलाडी छात्र-छात्राओं की तुलना में संवेगात्मक परिपक्वता में कमी पायी गयी। जिन छात्रों में करियर और शिक्षा के बारे में अपनी महत्वाकांक्षओं पर स्वचालित प्रतिक्रिय प्राप्त की वो छात्र कैरियर के निर्णय और आकांक्षत्मक संरेखण की आत्म-प्रभावकारिता में सुधार कर सकते है। करियर की पसंद और इन करियर विकल्मों लिए किशोरी की प्रभाव करिता को सकारात्मक रूप् से प्रभावित किया।

कोविड-19 के दौरान प्रौधोगिकी स्वी कृति और ई-लर्निंगं के बीच सकारात्मक संबंधो का पता चला। वर्तमान अध्ययन न केवल स्थानीय सरकार को व्यावहारिक रणनीतियों को पेश करने में मदद करेगा, बल्कि छात्रों को उनकी शैक्षिक यात्रा के आवश्यक भाग के रूप् में ई-लर्निंगं को स्वीकार करने के लिए भी प्रेस्ति करेगा। आम तौर पर संचार और भावनात्मक क्षमता में साथियों का विकास करेगा।

अतः उपर्युक्त पहलुओं को ध्यान में रखते हुए शोधर्थिनी को यह जिज्ञासा हुई कि, क्या माध्यमिक स्तर पर सांवेगिक परिपक्वता और आत्मबोध पर ई-लर्निंग का प्रभाव रहेगा? अतः तथ्यों के सन्दर्भ में प्रभाव का अध्ययन करने का निश्चय किया ।

शोध अध्ययन का औचित्य

'माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सांवेगिक परिपक्वता तथा आत्मबोध पर इलेक्ट्रानिक अधिगम के प्रभाव का अध्ययन, में ई-लर्निंग से अभिप्राय कक्षा 9, 10, 11, 12, (14 से 17 वर्ष) के छात्रों द्वारा प्रयोग की जाने वाली कम्प्यूटर शिक्षा, मोबाइल के द्वारा ज्ञानार्जन एवं अध्यापकों द्वारा ई कंटेंट प्रेषण के द्वारा सम्पूर्ण अध्ययन वृत्ति के अन्तर्गत सीखे जाने वाले ज्ञान एवं कौशल के साथ-साथ बालकों में आत्मबोध अर्थात् स्वयं की शक्तियों का स्वयं के द्वारा निरूपण, स्वयं की शक्तियों को पहचानकर लक्ष्य को साधना आदि पर ई लर्निंग के प्रभाव का अध्ययन वर्तमान भारत के भविष्य को एक उचित दिशा एवं दशा प्रदान करने के लिए सहायक सिद्ध होता है। ई-लर्निंग की बढ़ती मांग ने भारत सरकार को यंग एस्पायरिंग माइंड्स (SWAYAM) के लिए स्टडी वेब्स ऑफ एक्टिव लर्निंग, ई-आचार्य, शोधगंगा, शोध गंगोत्री, ओपन जर्नल्स एक्सेस सिस्टम , वर्चुअल लैब्स जैसी कई नई पहल शुरू करने के लिए प्रेरित किया है। , स्पोकन ट्यूटोरियल, आदि पूरे देश में सभी शिक्षार्थियों के लिए ज्ञान को सुलभ बनाने के लिए। इसी तरह, स्कूली शिक्षा प्रणाली में, राष्ट्रीय शैक्षिक संस्थान जैसे ओपन एजुकेशनल रिसोर्सेज (एनआरओईआर), ई-पाठशाला, ई-बस्ता, शाला सिद्धि, आई-शेयर, ई-भाषा, शालदर्पण, आदि का निर्माण किया गया है। ऐसा माना जाता है कि जो छात्र ई- लर्निंग में दक्ष होते हैं, उनमें आत्मबोध का स्तर प्रायः कम पाया जाता है, तथा सांवेगिक दशा में सांवेगिक परिपक्व छात्र प्रायः ई-लर्निंग सिस्टम में स्वयं को सुखमय प्रतीत नहीं करते वरन् उनमें आत्मबोध का स्तर उच्च पाया जाता है, और सामाजिक रूप से सुदृढ़ सामाजिक तन्त्र के अनुसार उपयुक्त पाये जाते हैं।

शोध प्रश्न

- क्या माध्यमिक स्तर के बालकों में ई-लर्निंग में उच्च स्तरीय अध्ययन क्षमता है?
- ई-लर्निंग विद्यार्थियों में सांवेगिक परिपक्वता किस स्तर तक है?
- क्या ई-लर्निंग विद्यार्थी आत्मबोध को जानते हैं?

- क्या छात्र की तुलना में छात्राएंे सांवेगिक रूप से अधिक परिपक्व होती है?
- क्या छात्र की तुलना में छात्राएं ई-लर्निंग से अधिक प्रभावित है?
- क्या शहरी छात्र की तुलना में शहरी छात्राऐं ई-लर्निगं से अधिक प्रभावित है?

शोध अध्ययन का उद्देश्य

- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की ई-लर्निंग की स्थिति का अध्ययन करना।
- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की ई-लर्निंग का छात्र एवं छात्राओं में तुलनात्मक अध्ययन करना।
- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की ई-लर्निंग का ऐडेड और प्राइवेट स्कूल में तुलनात्मक अध्ययन करना।
- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सांवेगिक परिपक्वता के स्तर का अध्यन करना।
- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सांवेगिक परिपक्वता का छात्र एवं छात्राओं में तुलनात्मक अध्ययन करना।
- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सांवेगिक परिपक्वता का ऐडिड और प्राइवेट स्कूल के छात्रों में तुलनात्मक अध्ययन करना।
- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मबोध के स्तर का अध्ययन करना।
- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की ई-लर्निंग और सांवेगिक परिपक्वता के सम्बन्ध का अध्ययन करना।
- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की ई-लर्निंग और आत्मबोध के सम्बन्ध का अध्ययन करना।
- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सांवेगिक परिपक्वता और आत्मबोध के सम्बन्ध का अध्ययन करना।
- शहरी एवं ग्रमीण विद्यार्थियों के बीच सांवेगिक परिपक्वता एवं ई-लर्निंग का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के बीच सावेगिक परिपक्वता और आत्मबोध का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पना

- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की ई-लर्निंग के अध्ययन में छात्र.छात्राओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा
- माध्यमिक स्तर के प्राइवेट और ऐडेड स्कूल के छात्रों में ई-लर्निंग की स्थिति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा
- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों मे ई-लर्निंग और सांवेगिक परिपक्वता में कोई सकारात्मक सह सम्बन्ध नहीं पाया जायेगा।
- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में ई-लर्निंग और आत्मबोध के छात्रों में कोई सकारात्मक सहसम्बन्ध नहीं है।

- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सांवेगिक परिपक्वता और आत्मबोध में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा ।
- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सांवेगिक परिपक्वता के अध्ययन में छात्र एवं छात्राओं मंे कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।
- माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के बीच कोई सार्थक अन्तर नही पाया जायेगा।

समस्या कथन

शोधार्थिनी द्वारा प्रस्तुत विषय श्माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सांवेगिक परिपक्वता तथा आत्मबोध पर ई-लर्निंग के प्रभाव का अध्ययनश् का चयन किया गया।

समस्या में प्रयुक्त शब्दों की परिभाषा

सांवेगिक परिपक्वता

सैद्धान्तिक परिभाषा

Ashkanasy (2001) "सांवेगिक परिपक्वता को क्षमताओं, प्रतिस्पर्धाओं और कौशल की एक सारणी के रूप में परिभाषित किया जो किसी की माँग को पूरा करने की क्षमता को प्रभावित करते हैं।

कार्यात्मक परिभाषा

प्रस्तुत शोध में सांवेगिक परिपक्वता से तात्पर्य माध्यिमक स्तर के बालकों में संवेग का नियमन, नियन्त्रण एवं परिस्थिति के अनुसार संवेग को प्रस्तुत करने की क्षमता से हैं।

सैद्धान्तिक परिभाषा

बंडुरा (1986)

आवश्यक व्यवहार को निष्पादित करने की उसकी क्षमता पर एक व्यक्ति के विश्वास को संदर्भित करता है। आत्म बोध किसी की प्रेरणा, व्यवहार और सामाजिक वातावरण पर नियंत्रण स्थतित करने की क्षमता में आत्मविश्वास को दर्शाता है।

कार्यात्मक परिभाषा

प्रस्तुत शोध आत्मबोध से तात्पर्य माध्यमिक स्तर के बालकों में स्वयं के प्रति जानकारी, स्वयं की क्षमता का अनुभव से हैं।

सैद्धान्तिक परिभाषा

ई अधिगम - रोजेनवर्ग (2001) "ई-लर्निंग से तात्पर्य इन्टरनेट तकनीकियों के ऐसे उपयेाग से है जिनमें विविध प्रकार के ऐसे रास्ते खुले जिनके द्वारा ज्ञान और कार्यक्षमताओं में वृद्धि की जा सके।"

कार्यात्मक परिभाषा

प्रस्तुत शोध में ई-लर्निंग से तात्पर्य माध्यमिक स्तर के बालकों में इन्टरनेट प्रयोग तथा आनलाइन माध्यम से अधिगम करने की प्रक्रिया, कौशल एवं दक्षता से हैं।

शोध अध्ययन के चर

स्वतंत्र चर - ई-लर्निंग

आश्रित चर - सांवेगिक परिपक्वता और आत्मबोध

जनसांख्यिकीय - लिंग (छात्र एवं छात्रायें)

शोध का परिसीमांकन

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन आगरा मण्डल में संचालित सहायता प्राप्त विद्यालय एवं प्राइवेट विद्यालय तक सीमित रहेगा।
2. प्रस्तुत शोध अध्ययन माध्यमिक स्तर के विद्यालय के विद्यार्थियों पर किया जायेगा।
3. प्रस्तुत शोध अध्ययन में ऐडेड और प्राइवेट विद्यालय के 600 विद्यार्थियों पर किया जायेगा।

शोध अध्ययन की प्रक्रिया

- उपकरणों का चयन
- प्रतिदर्श चयन
- उपकरणों का प्रयोग

- आंकड़ों का संग्रहण
- आंकड़ों विश्लेषण
- परिणामों की व्याख्या
- **शोध अध्ययन की प्रक्रिया -** शोध समस्या के चयन के पश्चात शोध अध्ययन की प्रक्रिया को अग्रसर करने के लिए शोधार्थिनी ने शोध से सम्बन्धित शोध समस्या के अनुसार उपकरण का चयन किया।
- **प्रतिदर्श चयन -** प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थिनी के द्वारा आगरा मण्डल के विद्यालयों का चयन उदेश्यपूर्ण विधि द्वारा किया जायेगा तथा विधार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया जायेगा।
- **उपकरणो का प्रयोग -** प्रस्तुत शोध में शोधायीनी के द्वारा सावेगिक परिपक्वता Tara sabapathy (2017), ई.-लर्निगं Dimple Rani (2015) तथा अत्मबोध S dahiya and N. kumari (2018) का प्रयोग किया जाऐगा।
- **आकड़ो का संग्रहण -** शोध कार्य को अग्तसर करने के लिए शोद्यार्थिनी द्वारा चयन किये गये उपकरणों के प्रयोग द्वारा आकड़ो का संग्रहण किया जाऐगा।
- **विश्लेषण -** शोध कार्य को सम्पूर्ण करने हेतु उपकरणों द्वारा प्राप्त आकड़ो का विश्लेषण शोध अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यकीय विधियों के प्रयोग द्वारा प्राप्त किया जायेगा।
- **परिणामों की व्याख्या-** शोध कार्य के अन्तर्गत प्राप्त किये गये सम्पूर्ण परिणामों की व्याख्या जायेगी।

अध्ययन की विधि

प्रस्तुत अध्ययन में शोधार्थी द्वारा अनुसंधान की वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का अनुसरण किय जायेगा। बेस्ट (1972) के शब्दों में वर्णनात्मक शोध वर्तमान स्थिति की व्याख्या व विवेचना प्रस्तुत करना है। इसका सम्बन्ध उन स्थितियों व सम्बन्धों से है, जिनका अस्तित्व वर्तमान में अथवा उन व्यवहारों से है, जिनका प्रचलन है तथा उन प्रभावों से है जिन्हें अनुभव किया जा रहा है अथवा उन उपनीतियो से है जो विकासशील है।

न्यादर्श एवं न्यादर्श विधि

शोध अध्ययन हेतु आगरा मण्डल में स्थित दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीटयूट से सम्बद्ध ऐडेड विद्यालय एवं अन्य प्राइवेट माध्यमिक स्तर के विद्यालय, उद्देश्यपूर्व विधि द्वारा चयन किये जायेगंे तथा उन विद्यालयों से 600 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया जायेगा।

शोध में प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन में आंकड़ों के संग्रहण हेतु सांवेगिक परिपक्वता Tara sabapathy (2017) this scale consists 44 items divided into six component.

1-Self-knowledge, 2- self-confidence, 3-self-control, 4- social adjustment, 5- acceptance of reality and 6- consistency (Age 14 to 18 Years). द्वारा निर्मित उपकरणए आत्मबोध S dahiya and N. kumari (2018) It consist 35 items divided into five dimension Physical, 2- Social, 3- Emotional, 4- Academic and 5-Spiritual. (Age Group 13-18 Years) द्वारा निर्मित उपकरण का प्रयोग किया जायेगा।

सांख्यिकी विधियाँ

प्रस्तुत शोध अध्ययन में माध्य, मानक विचलन, टी टेस्ट तथा सहसम्बन्ध विधि का प्रयोग किया जायेगा तथा शोध निर्देशक के निर्देश अनुसार आवश्यक सांख्यिकीय विधिओं का प्रयोग किया जायेगा ।

मध्यमान - प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्राप्तांको का औसत निकालने के लिए मध्यमान का प्रयोग किया जायेगा।

मध्यमान = $\frac{\sum Fx}{N}$

प्रमाणिक विचलन (**S.D**) -माध्यांक से प्रसार को ज्ञात करने के लिए प्र्माणिक विचलन का प्रयोग किया जायेगा।

प्रमाणिक **(S.D)** = $S.D. = \sigma_x = \frac{\sqrt{\sum(x-x)^2}}{\sqrt{(n-1)}}$, **if n ≤ 30**

$\sigma = \sqrt{\frac{1}{n}\sum(X - \bar{X})^2}$, **if n ≥ 30**

टी टेस्ट -दो समूहो के बीच अन्तर को ज्ञात करने के लिए **T-Test** का प्रयोग किया जायेगा।

$$t = \frac{\bar{x} + \mu}{\frac{\sigma^2}{\sqrt{n}}}$$

x bar is the mean of the sample, μ is the assumed mean, σ is the standard deviation and n is the number of observations.

सहसम्बन्ध - दो या दो से अधिक समूह के बीच सम्बन्ध ज्ञात करने के लिए सहसम्बन्ध निकाला जायेगा।

$$r = \frac{\sum(x_i - \bar{x})(y_i - \bar{y})}{\sqrt{\sum(x_i - \bar{x})^2 \ \sum(y_i - \bar{y})^2}}$$

x_i =X variable sample, y_i= Y variable sample, $\sum \bar{x}$ = mean of values in X variable, $\bar{y}$ = mean of values in Y variable.

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- आर्य, ए (1984) परिवार में श्रेष्ठ बच्चों की भावनात्मक परिपक्वता और मूल्य।
- अहंगी, ए। और शराफ, जेड (2013) स्वयं प्रभावकारिता के बीच संबंधों की जांच, चेनारन हाई स्कूल में नियंत्रण और पुरुष और महिला छात्रों की अकादमिक उपलब्धियां, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंजीनियरिंग रिसर्च एंड एप्लीकेशन, 3 (5), 875-879।
- अहंगी, ए और शराफ, जेड (2013) स्वयं प्रभावकारिता के बीच संबंधों की जांच, चेनारन हाई स्कूल में नियंत्रण और पुरुष और महिला छात्रों की अकादमिक उपलब्धियां, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंजीनियरिंग रिसर्च एंड एप्लीकेशन, 3 (5), 875-879।
- बालाविवेकंदन, - Arulchelvan S 2013, Learning एडल्ट लर्नर्स के लिए कंप्यूटर असिस्टेड ई-लर्निंग सॉफ़्टवेयर की प्रभावशीलता, एशियन जर्नल ऑफ़ इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी, वॉल्यूम। 12, नहीं। 11-12, पीपी 349-359।
- बंदुरा, ए (1982) मानव सटीकता में स्व-प्रभावकारिता तंत्र अमेरिकी मनोवैज्ञानिक, 37, 122-147।
- बंदुरा, ए (1997) आत्म-प्रभावकारिताः नियंत्रण का अभ्यास न्यूयॉर्कः फ्रीमैन
- भल्ला, वी (2013) अपनी आत्म-प्रभावकारिता, व्यक्तित्व और निर्णय लेने की शैली के संबंध में किशोरों की कठिनाइयों का करियर निर्णय। अप्रकाशित पीएचडी थीसिस। शिक्षा विभाग, चंडीगढ़ः पंजाब विश्वविद्यालय।

- ब्राउन, सी (2010) करियर निर्णय लेने की प्रक्रिया पर भावनात्मक बुद्धि का प्रभाव कैरियर मूल्यांकन के जर्नल, 4, 356-351।
- ब्राउन, सी, जॉर्ज-कर्रान, आर, और स्मिथ, एम एल (2003) कैरियर की प्रतिबद्धता और निर्णय लेने की प्रक्रिया में भावनात्मक बुद्धिमत्ता की भूमिका कैरियर आकलन के जर्नल, 11, 379-392।
- चेकसेट्स, के (2001) विकलांग छात्रों के साथ करियर निर्णय लेने की आत्मनिर्भरता की भविष्यवाणी (डॉक्टरेट शोध प्रबंध, पेंसिल्वेनिया स्टेट यूनिवर्सिटी, 2001) निबंध निबंध इंटरनेशनल, 62, 3395 (यूएमआई नंबर 3020428)
- कून, के.एल. (2008) स्नातक के छात्रों के बीच मुश्किलें खड़ी करने वाले करियर के निर्णय की भविष्यवाणी करनाः कैरियर के निर्णय की भूमिका आत्म-प्रभावकारिता, कैरियर आशावाद और मुकाबला करना। पूर्ववर्ती शोध प्रबंध और शोध डेटाबेस (3383544) से उपलब्ध है।
- चौहान, वी.एल. और भटनागर, टी (2003) किशोर पुरुष और महिला छात्रों की भावनात्मक परिपक्वता, भावनात्मक अभिव्यक्ति और भावनात्मक भागफल का आकलन करना। जर्नल ऑफ़ कम्युनिटी गाइडेंस एंड रिसर्च, 20 (2), 157-167।
- चौधरी, एन और बजाज, एन (1993) घर और अनाथालयों में रहने वाले किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य के सहसंबंध के रूप में भावनात्मक परिपक्वता भारतीय शिक्षा की पत्रिका, 60-65।
- देवेंद्र और निकम (2012) ओपीएसी और कर्नाटक में निम्न विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में उपयोगकर्ता की धारणाः एक अध्ययन।, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंफॉर्मेशन डिसेमिनेशन एंड टेक्नोलॉजी, वॉल्यूम 3 (नंबर 4) OCT No- DEC 2012

- गराईक, बोंग वेलिंगटन (2010) निर्धन शैक्षणिक प्रदर्शन के निर्धारक 13,2013 को इंटरनेट से पुनप्र्राप्त।
- घोष, ए 2006, संचार प्रौद्योगिकी और मानव विकास ऋषि प्रकाशन, नई दिल्ली।
- कोठारी कमिशन 1964, शिक्षा आयोग की रिपोर्ट 1964- 66, शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।
- कौर, गगनदीप और कौर किरनजीत, (2015)। माता-पिता-बच्चे के संबंध में किशोर छात्रों की भावनात्मक परिपक्वता रिसर्च जर्नल, एजुकेशन सेक्टर, 10 (42), 48।
- कौर, डी (2001) माता-पिता के प्रोत्साहन के संबंध में किशोरों की भावनात्मक परिपक्वता का अध्ययन अप्रकाशित एम.एड. शोध प्रबंध, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़।
- कोठारी, सी आर 2009, रिसर्च मेथोडोलॉजी, न्यू एज इंटरनेशनल, नई दिल्ली।
- कुलश्रेष्ठ, एस एंड गौतम, ए 2012, ई कॉन्सेप्टुअल पेपर ऑन ई - लर्निंग टेक्नोलॉजीज ऑफ 21 सेंचुरी ', इंटरनेशनल जर्नल ऑफ आईटी, इंजीनियरिंग एंड एप्लाइड साइंसेज रिसर्च, वॉल्यूम। 1, नहीं। 3, पीपी 1-4।
- सिन्हा, मनोज कुमार (2011) भारत के उत्तर पूर्वी क्षेत्र के विश्वविद्यालय और कॉलेज शिक्षकों के बीच सूचना और संचार प्रौद्योगिकी जागरूकताः एक सर्वेक्षण पुस्तकालय प्रगति (अंतर्राष्ट्रीय) वॉल्यूम ३१(क्रमांक २) पृ .२-4-२३४
- वशिष्ठ, सीमा (2012) आईसीटी और लाइब्रेरियनः तकनीकी विकास की चुनौतियों से बचे।
- जर्नल ऑफ़ इंडियन लाइब्रेरी एसोसिएशन टवस.48 (नंबर 2) पीपी 36 .40

- दत्ता, जे, चेतिया, पी और सोनी, जे.सी. (2015)। असम में माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि, भावनात्मक परिपक्वता और बुद्धिमत्ता। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंस एंड रिसर्च, 5 (7), 1159-1171।
- Misra.s (2009) emotional maturity and adjustment level on school students, psycholingua. 39 (2). 114-116.
- Panth nandini (2015) adjustment and emotional maturity between gender international journal of research in social.